श्रीमती श्यामादेवी

डिग्री कालेज ऑफ साइन्स एण्ड मैनेजमेन्ट

(डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद से सम्बद्ध)

सिसवाँ, रामपुर सकरवारी - अम्बेडकर नगर

(बी0 एड0)

सत्र : 201.....-201.....

छात्राध्यापक / छात्राध्यापिका का नाम ....रुची -....

शैक्षिक योग्यता ....बी० एड० I वर्ष -....

महाविद्यालय अनुक्रमांक ....83....

विश्व विद्यालय अनुक्रमांक ....29603139....

शिक्षण विषय ....हिन्दी शिक्षण -....

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

सूक्ष्म शिक्षण -

Page
Date

डॉ॰ बी॰ के॰ पासी के अनुसार -

"शिक्षण कौशल छात्रों के सीखने के लिये सुगमता प्रदान करने के विचार से सम्पन्न किये गये सम्बंधित शिक्षण क्रियाओं या व्यवहारों का समूह हैं।"

अतः यह कहा जा सकता हैं कि शिक्षण कौशल शिक्षक के हाथ में वह शस्त्र है जिसका प्रयोग करके शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली तथा सक्रिय बनाता है तथा कक्षा की अन्तः प्रक्रिया में सुधार लाने का प्रयास करता है। सूक्ष्म शिक्षण कौशल पर आधारित होता हैं।

स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय तथा कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय ने क्रमशः 14 तथा 18 शिक्षण कौशलों की सूची तैयार की हैं। भारतवर्ष में Centre for Advanced Study in Education (C.A.S.E) एम॰ एस॰ विश्वविद्यालय बड़ौदा में 21 शिक्षण कौशलों की सूची तैयार की गई।

सन् 1976 में डॉ॰ पासी॰ ने – 13 शिक्षण कौशल माने – जबकि अन्य ने सन् 1979 में 20 शिक्षण कौशल आवश्यक बताए।

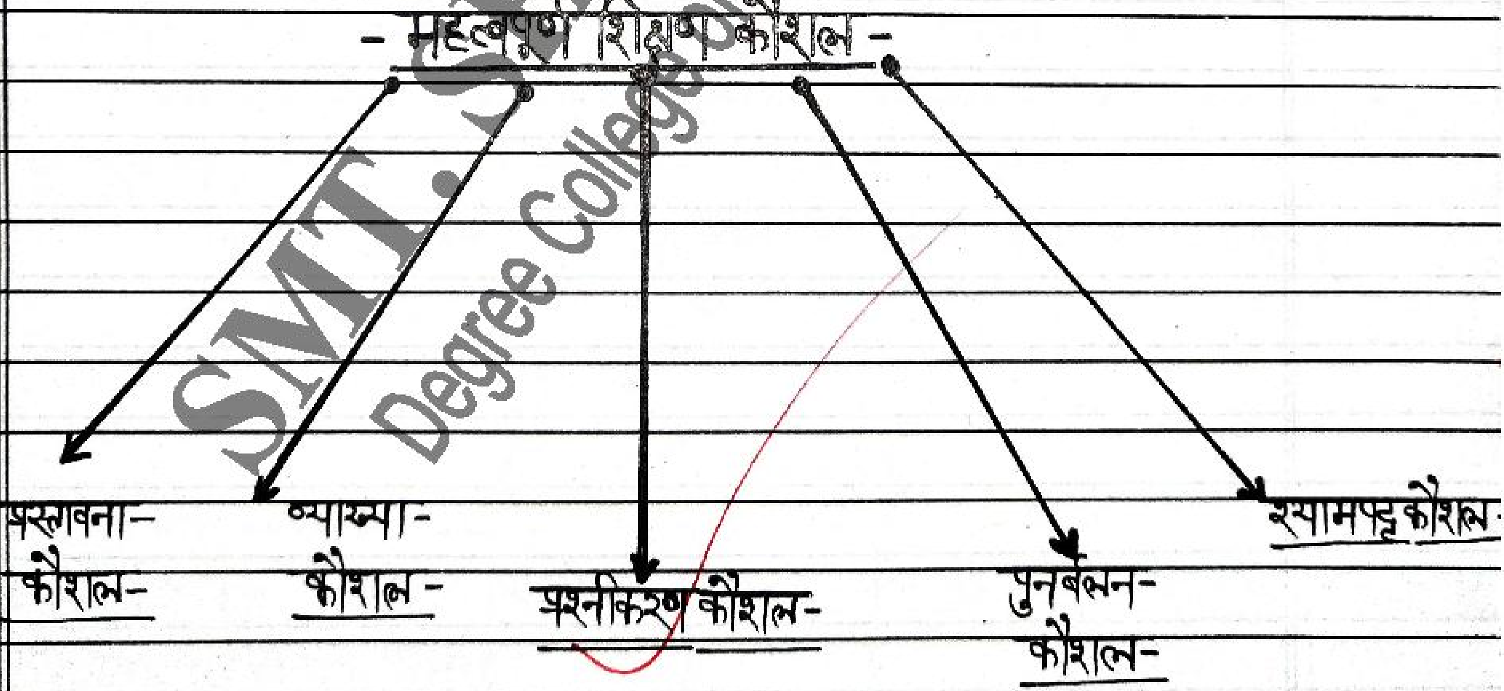

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

– प्रस्तावना कौशल –

Page
Date

कक्षा-
विषय-

दिनांक-
अवधि-
कालांश-

प्रकरण-

साखी (कबीर)

उद्देश्य

1- छात्राध्यापकों में पूर्व ज्ञान परीक्षण द्वारा पाठ को उचित रूप से प्रारम्भ करने की-योग्यता का विकास करना।
2- छात्राध्यापक के विभिन्न कथनों के उचित क्रम में प्रयोग करने की योग्यता-का विकास करना।
3- छात्राध्यापक में अधिगम के प्रति प्रेरणा उत्पन्न करने की योग्यता का विकास-करना।
4- छात्राध्यापक में सीखी हुई विषय-वस्तु एवं केवल सिखाने योग्य विषय के-मध्य उचित सम्बंध बनाने की योग्यता का विकास करना।

पूर्वज्ञान-

छात्र सन्त कबीर की साखियों के संदर्भ में सामान्य जानकारी रखते-हैं।

– निरीक्षण तालिका –

क्र. सं.	अवयव-	सर्वोत्तम-	उत्तम-	अच्छा-	संतोषजनक-	असंतोषजनक
1-	आवाज की स्पष्टता, भावभंगिमा एवं नेत्र सम्पर्क।					
2-	श्रव्य-दृश्य सामग्री का उपयोग					
3-	शिक्षक छात्र अन्तः क्रिया।					

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

Page
Date

क्र.सं.-	अवयव-	सर्वोत्तम-	उत्तम-	अच्छा-	संतोषजनक-	असंतोषजनक-
4-	कथनों में क्रमबद्धता।					
5-	समय अवधि।					

पर्यवेक्षक टिप्पणी — पर्यवेक्षक हस्ताक्षर

- प्रस्तुतीकरण -

	छात्राध्यापक क्रिया-	छात्र क्रियाएँ-
प्रश्न-1	भक्ति काल को कितनी शाखाओं में बाँटा गया है ?	उ.- भक्ति काल को दो शाखाओं में बाँटा गया है।
प्र.-2	कौन-कौन सी दो शाखाएँ हैं ?	उ.- सगुण भक्ति शाखा और निर्गुण भक्ति शाखा।
प्र.-3	निर्गुण भक्ति शाखा के कवियों के नाम बताइये ?	उ.- कबीर, रहीम आदि।
प्र.-4	'साखी' किसकी रचना है ?	उ.- कबीरदास जी।
प्र.-5	'साखी' के विषय में आप और क्या जानते हैं ?	उ.- समस्यात्मक।

उद्देश्य कथन — आज हम सन्त कबीरदास जी द्वारा रचित पद्य 'साखी' के अन्तर्गत उनके दोहों का रसास्वादन करेंगे।

SMT. SHYAMA DEVI Degree College of Science & Management

- व्याख्यान कौशल -

Page
Date

कक्षा -
विषय -

दिनांक -
अवधि -
कालांश -

प्रकरण - साखी (कबीर)

उद्देश्य -

1- कथनों को प्रारम्भ करने एवं समाप्त करने की योग्यता का विकास करना।
2- व्याख्यान के दौरान विचारों को एक व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत करने की योग्यता का विकास करना।
3- विषयवस्तु को सम्बंधित मुख्य बिन्दुओं में परिवर्तित करने की योग्यता का विकास करना।
4- छात्रों की बोध शक्ति में परीक्षण की योग्यता का विकास करना।

क्र०सं०	अवयव -	सर्वोत्तम -	उत्तम -	अच्छा -	संतोषजनक -	असंतोषजनक
1-	कथनों की स्पष्टता -					
2-	व्याख्या की धारा प्रवाहता -					
3-	व्याख्या प्रक्रिया में प्रश्नीकरण।					
4-	योजनाबद्ध पुनरावृत्ति।					
5-	मुख्य बिन्दुओं की सारांश प्रस्तुति।					

पर्यवेक्षक टिप्पणी -

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर -

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

Page	
Date	

– प्रस्तुतीकरण –

छात्राध्यापक क्रिया –	छात्र क्रियाएँ –	श्यामपट्ट कार्य –
प्रस्तुत दोहा हिन्दी भक्तिकाल की निर्गुण शाखा के सुप्रसिद्ध कवि सन्त कबीर दास द्वारा रचित है। इसमें कबीर दास जी बाह्य आडम्बरों का विरोध तथा पत्थर पूजा का औचित्य न होने के विषय में कहते हैं कि – यदि पत्थर पूजने से ईश्वर मिल जाते हैं तो फिर एक पहाड़ की पूजा करता हूँ वे कहते हैं कि ऐसे पत्थर पूजने से तो ये चक्की भली है जिससे अनाज पीसकर खाने से सभी का पेट तो भरता है उसे भूख से सन्तुष्टि प्राप्त होती है। अर्थात् मैं ऐसे पत्थर को पूजने से तो चाकी को पूजना उचित समझता हूँ।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	पाहन पूजै हरि मिलै। तौ मैं पूजूँ पहार ॥ ताते ये चाकी भली। पीस खाय संसार ॥

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

— प्रश्नीकरण कौशल —

Page
Date

कक्षा -
विषय -
प्रकरण -

दिनांक -
अवधि -
कालांश -

उद्देश्य -

1- छात्राध्यापक द्वारा कक्षा के सभी छात्रों को अधिगम प्रक्रिया हेतु सम्मिलित करना।
2- छात्रों में उनकी चिन्तन एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करना।
3- छात्रों में विषय के प्रति रुचि एवं जिज्ञासा उत्पन्न करना।
4- छात्रों में विभिन्न सूचनाओं को एकत्रित करने एवं प्रयोग में लाने की क्षमता का विकास करना।

— निरीक्षण तालिका —

क्र.सं. -	अवयव -	सर्वोत्तम -	उत्तम -	अच्छा -	संतोषजनक -	असंतोषजनक
1-	प्रश्नों की संरचना।					
2-	प्रश्नों का केन्द्रीयकरण।					
3-	प्रश्नों का उचित वितरण।					
4-	प्रश्नों के मध्य उचित विराम।					
5-	प्रश्नों को सम्बंधित शिक्षण-बिन्दु पर केन्द्रित करना।					
6-	प्रश्नों का कठिनाई स्तर।					

पर्यवेक्षक टिप्पणी -

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर -

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

- प्रस्तुतीकरण -

	छात्राध्यापक क्रिया-	छात्र क्रियाएँ-	सहायक सामग्री-
प्र०-1	प्रस्तुत दोहे के रचयिता कौन हैं?	उ०- सन्त कबीर जी हैं।	पुस्तक-
प्र०-2	यह दोहा उनकी किस रचना से लिया गया हैं?	उ०- प्रस्तुत दोहा उनकी 'साखी' रचना से लिया गया हैं।	
प्र०-3	कबीर किसका विरोध कर रहें हैं?	उ०- कबीर पत्थर पूजा का विरोध कर रहे हैं।	
प्र०-4	कबीर पत्थर के स्थान पर क्या पूजने को कहते हैं?	उ०- कबीर पत्थर की जगह पहाड़ पूजने को कह रहे हैं।	
प्र०-5	क्या पूजने से ईश्वर मिलेगा कबीर के अनुसार?	उ०- चाकी को पूजने से पुण्य मिलेगा।	
प्र०-6	चाकी को पूजने के लिए क्यों कहा हैं?	उ०- क्योंकि - इसके द्वारा व्यक्ति की भूख की संतुष्टि होती हैं।	
प्र०-7	कबीर किस विचारधारा के कवि थे?	उ०- कबीर निर्गुण विचारधारा के कवि थे।	
प्र०-8	कबीर क्यों इनका विरोध करते हैं?	उ०- क्योंकि - वे किसी ईश्वर के उपासक नहीं थे।	

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

-श्यामपट्ट कौशल-

Page	
Date	

कक्षा-
विषय-
प्रकरण-

दिनांक-
अवधि-
कालांश-

उद्देश्य-

1- श्यामपट्ट लेखन के दौरान छात्राध्यापकों में निम्न उद्देश्यों का विकास करना है-
- अ- लेखन में स्पष्टता-
- ब- श्यामपट्ट कार्य में स्वच्छता-
- स- श्यामपट्ट लेखन की उपयुक्तता-

2- छात्रों में स्पष्ट रूप से प्रत्यय को समझने की योग्यता का विकास करना।

3- छात्रों को पुनर्बलित करते हुए मौखिक शिक्षण को स्पष्ट करना।

4- छात्रों का ध्यान आकर्षित करना तथा ध्यान को बनाये रखने की योग्यता का विकास करना।

- निरीक्षण तालिका -

क्र.सं.	अवयव-	सर्वोत्तम-	उत्तम-	अच्छा-	संतोषजनक-	असंतोषजनक
1-	लिखावट की स्पष्टता, अक्षरों का आकार मोटाई एवं अंतर					
2-	श्यामपट्ट लेखन में स्पष्टता					
3-	रेखाओं का एक सीध में होना					
4-	रेखाओं के बीच उचित दूरी।					
5-	अक्षरों में लिप्त लेखन					
6-	शिक्षण बिन्दु में क्रमबद्धता।					
7-	सरलता एवं संक्षिप्तता।					

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

क्र॰सं॰	अवयव	सर्वोत्तम	उत्तम	अच्छा	संतोषजनक	असंतोषजनक
8-	छात्रों का ध्यान आकर्षित करना।					

पर्यवेक्षक टिप्पणी

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर

— प्रस्तुतीकरण —

छात्राध्यापक क्रिया	छात्र क्रियाएँ	सहायक सामग्री
छात्राध्यापक कठिन शब्दों के अर्थ को छात्रों से पूछते हुये उन्हें श्यामपट्ट पर लिखेगा।	छात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।	
शब्द - अर्थ पाहन - पत्थर। पहार - पहाड़। हरि - ईश्वर। ताते - इससे। भली - अच्छी।		**शब्द - अर्थ** पाहन - पत्थर। पहार - पहाड़। हरि - ईश्वर। ताते - इससे। भली - अच्छी।

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

पुनर्बलन कौशल

Page	
Date	

कक्षा-
विषय-
प्रकरण-

दिनांक-
अवधि-
कालांश-

उद्देश्य-
1- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया हेतु छात्रों को तैयार करना एवं उन्हें सम्मिलित करना।
2- छात्रों को नवीन प्रत्यय को सीखने हेतु अभिप्रेरित करना।
3- छात्रों के विषय के प्रति झिझक एवं विरोध को दूर करना।
4- छात्रों को प्रोत्साहित करना एवं उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि करना।
5- छात्रों की गलतियों को सुधारकर अधिगम को प्रभावी बनाना।

निरीक्षण तालिका

क्र.सं.-	अवयव-	सर्वोत्तम-	उत्तम-	अच्छा-	संतोषजनक-	असंतोषजनक
1-	धनात्मक शाब्दिक पुनर्बलन-					
2-	धनात्मक अशाब्दिक पुनर्बलन-					
3-	ऋणात्मक शाब्दिक पुनर्बलन-					
4-	ऋणात्मक अशाब्दिक पुनर्बलन-					
5-	अतिरिक्त पुनर्बलन-					

पर्यवेक्षक टिप्पणी-

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर-

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management

- [illegible] -

- प्रस्तुतीकरण -

क्र॰सं॰-	छात्राध्यापक क्रिया-	छात्र क्रियाएँ-	पुनर्बलन घटक-
प्र॰-1	कबीरदास सगुण भक्ति शाखा के कवि हैं।	असत्य-	बहुत अच्छा-(सकारात्मक)।
प्र॰-2	कबीर ईश्वर के उपासक नहीं थे।	सत्य-	बहुत बढ़िया-(सकारात्मक)।
प्र॰-3	कबीरदास पत्थर पूजा के विरोधी थे।	असत्य-	गलत है- (नकारात्मक)।
प्र॰-4	बाह्य आडम्बर के कट्टर विरोधी थे।	असत्य-	नकारात्मक भावभंगिमा द्वारा।
प्र॰-5	पत्थर से ज्यादा वे चाकी को मानते थे।	सत्य-	सकारात्मक भावभंगिमा द्वारा-(सिर हिलाकर)।
प्र॰-6	हिन्दू धर्म के उपासक थे।	असत्य-	हाँ (सकारात्मक हाथ से)।
प्र॰-7	कबीर एक समाज-सुधारक थे।	सत्य-	सकारात्मक (भाव भंगिमा द्वारा)।
प्र॰-8	कबीर सादा जीवन में विश्वास रखते थे।	सत्य-	बहुत अच्छा (सकारात्मक) पीठ थपथपाकर।

SMT. SHYAMA DEVI
Degree College of Science & Management